प्रौढ़ सब्त स्कूल बाईबल अध्ययन गाइड

परमेश्वर का प्रेम और न्याय

(मानक संस्करण से अनुवादित)

लेखक : जॉन सी. पेखम

जनवरी, फरवरी, मार्च
2025

विषय सूची

1.	परमेश्वर सेंतमेंत प्रेम करता है –	दिसंबर 28 - जनवरी 3 ...	3
2.	वाचा प्रेम –	जनवरी 4-10 ...	13
3.	परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए –	जनवरी 11-17 ...	24
4.	परमेश्वर उत्साही और दयालु है –	जनवरी 18-24 ...	34
5.	ईश्वरीय प्रेम का कोप –	जनवरी 25-31 ...	44
6.	परमेश्वर का न्याय प्रेम –	फरवरी 1-7 ...	54
7.	बुराई की समस्या –	फरवरी 8-14 ...	64
8.	स्वतंत्र इच्छा, प्रेम और ईश्वरीय विधान –	फरवरी 15-21 ...	74
9.	लौकिक संघर्ष –	फरवरी 22-28 ...	84
10.	वचनबद्धता के नियम –	मार्च 1-7 ...	94
11.	मैं और क्या कर सकता था? –	मार्च 8-14 ...	104
12.	प्रेम और न्यायः दो महानतम आज्ञाएँ–	मार्च 15-21 ...	114
13.	प्रेम व्यवस्था की पूर्ति है –	मार्च 22-28 ...	124

भूमिका

प्रेम और न्याय का परमेश्वर

परमेश्वर प्रेम है। ऐसा 1यूहन्ना 4: 8 और 16 कहता है। संपूर्ण बाइबल इस तथ्य की गवाही देती है। मसीही धर्म परमेश्वर के प्रेम के चरित्र पर केंद्रित है। परमेश्वर जो है उसके मूल में प्रेम है, हम जिस भी चीज में विश्वास करते हैं उसके मूल में प्रेम है, और हम जो कुछ भी करते हैं उसके मूल में प्रेम होना चाहिए। तदनुसार, जिस तरह से हम प्यार को समझते हैं वह हमारे संपूर्ण विश्वास और अभ्यास को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई मानता है कि परमेश्वर का प्रेम हासिल या प्राप्त किया जाना चाहिए, तो कोई व्यक्ति सोच सकता है कि परमेश्वर उनसे प्रेम नहीं करता क्योंकि वे पापी और अयोग्य हैं। और, दूसरों के संबंध में, कोई दूसरों से अपेक्षा कर सकता है कि वे प्रेम के योग्य हों, यह मुसीबत का नुस्खा है।

इस और कई अन्य तरीकों से, हम परमेश्वर के प्रेम को कैसे समझते हैं, इसका हमारे विश्वास और अभ्यास पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। फिर भी, प्रेम क्या है? यदि आप दस लोगों से प्रेम को परिभाषित करने के लिए कहें, तो आपको दस अलग-अलग उत्तर मिल सकते हैं। मसीहियों के बीच में भी, परमेश्वर के प्रेम के बारे में कई मिथक और गलतफहमियाँ हैं।

उदाहरण के लिए, मसीही सवालों के अलग-अलग उत्तर देते हैं जैसे:

क्या परमेश्वर का प्रेम केवल देता है, लेता कभी नहीं? क्या ईश्वरीय प्रेम विशुद्ध रूप से आत्म-बलिदान है, या क्या परमेश्वर भी मनुष्यों से प्रसन्न और अप्रसन्न हो सकता है? क्या परमेश्वर का प्रेम भावनात्मक है? क्या परमेश्वर को सचमुच इंसानों की परवाह है? क्या परमेश्वर का प्रेम अस्वीकार किया जा सकता है या आत्मसात किया जा सकता है? क्या परमेश्वर प्राणियों के साथ आगे-पीछे प्रेम संबंध में प्रवेश करता है? क्या क्रोध प्रेम से असंगत है? प्रेम और न्याय एक साथ कैसे चलते हैं? यदि परमेश्वर प्रेम है, तो इस संसार में बुराई इतनी अधिक क्यों है? क्या मनुष्य परमेश्वर की तरह प्रेम कर सकते हैं? यदि हाँ, तो वह कैसा होगा?

जेनेरल कॉन्फ्रेन्स ऑफ सेवेन्थ-डे ऐडवेंटिस्ट द्वारा तैयार पाठ का हिन्दी अनुवाद पास्टर तुरतन कन्डुलना मोबाईल नं० +919431906858 (e-mail: kturtan@gmail.com) एवं मुद्रण, सब्त स्कूल विभाग, पश्चिमी झारखण्ड सेक्शन ऑफ एस०डी०ए०, करम टोली चौक, राँची, झारखण्ड द्वारा किया जाता है ।

मुद्रक : काथलिक प्रेस, राँची - 834001 (झारखण्ड)
M. No. 8757340417, e-mail: catholic_press@yahoo.in

इनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट लग सकते हैं लेकिन ईश्वरीय प्रेम के मसीही व्यवहारों में अक्सर विवाद होते हैं। और, कई उत्तर जिन्हें कभी-कभी स्पष्ट मान लिया जाता है, बारीकी से निरीक्षण करने पर वे परमेश्वर के प्रेम के बारे में पवित्रशास्त्र जो सिखाता है, उसके साथ असंगत हो जाते हैं।

हम इन सभी प्रश्नों को एक बार में संबोधित नहीं करेंगे, लेकिन हम इस तिमाही में इन और अन्य प्रश्नों को उठाएंगे। और हम देखेंगे कि परमेश्वर का प्रेम हमारी सोच से कहीं अधिक महान है। पवित्रशास्त्र में दर्शाया गया परमेश्वर का प्रेम उन विचारों से कहीं बेहतर है जो आज हमारी दुनिया के अधिकांश हिस्सों में "प्रेम" के लिए प्रचलित हैं। आने वाले हफ्तों में, हम बाइबल में प्रकट हुए परमेश्वर के प्रेम के कुछ सबसे प्रमुख और सुंदर पहलुओं पर अधिक बारीकी से नजर डालेंगे।

और, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम देखेंगे कि किस प्रकार ईश्वरीय प्रेम और न्याय एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। बाइबल का परमेश्वर न्याय पसंद करता हैं (उदाहरण के लिए, यशा० 61: 8 देखें)। और, जैसा कि बाइबल उन्हें चित्रित करती है, ईश्वरीय प्रेम और न्याय एक साथ चलते हैं जैसे कि आप एक के बिना दूसरे को प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, वह इस संसार में अन्याय और पीड़ा के बारे में गहराई से चिंतित है, और वह स्वयं को दु:खितों और पीड़ितों के साथ खड़ा पाता है, स्वेच्छा से उस दर्द और दु:ख में प्रवेश करता है जो बुराई ने सृष्टि में किया है - खुद सबसे अधिक पीड़ित है, इतना अधिक कि परमेश्वर स्वयं बुराई का सबसे बड़ा शिकार हो।

संपूर्ण बाइबिल में, परमेश्वर को बार-बार बुराई और पीड़ा से दु:ख और पीड़ा होती है क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति को हमारी कल्पना से भी अधिक प्रेम करता है। कोई भी अपने लोगों के लिए मसीह के विलाप में परमेश्वर के प्रेम की गहराई को देख सकता है जब उसने कहा: "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, (वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा मती 23: 37)।

बाइबिल का परमेश्वर जो प्रेम है, अक्सर पूरे धर्मशास्त्र में अस्वीकृत प्रेम और खोए हुए प्रेम से टूटे हुए दिल और क्लेशित के रूप में चित्रित किया गया है। धर्मशास्त्र की पूरी कहानी इस बारे में है कि ब्रह्मांड के हर कोने और दरार में प्रेम को बहाल करने के लिए परमेश्वर ने क्या किया है और क्या कर रहा है। यह और बहुत कुछ इस तिमाही के पाठ का विषय है।

जॉन सी० पेखम ऐडवेंटिस्ट रिव्यू के सहयोगी संपादक हैं। जिस समय यह गाइड लिखा गया था, वह एंड्रयूज विश्वविद्यालय में सेवेंथ-डे-एडवेंटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी में धर्मशास्त्र और ईसाई दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे।